Sumangalam Prabha
A peer reviewed (Refereed) & open access journal
RNI N0.- UPHIN/2009/31180
PP.No.: 12-14

ISSN: 2250-1894
Vol.-15, No.-IV, Issus-60
Year: Jan-Mar 2025

महाकुंभ : धर्म एवं विज्ञान के अदभुत समन्वय का सनातन पर्व

डॉ0 तृप्ति दीक्षित
विभागाध्यक्ष गणित, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय कोटद्वार (उत्तराखंड)

सनातन धर्म में पर्व, उत्सव व अनुष्ठान वैज्ञानिकता व आध्यात्मिकता का अदभुत समन्वय होते है। सनातन धर्म में कुम्भ का पर्व समूचे विश्व का सबसे बड़ा आध्यात्मिक सम्मलेन है, इस वर्ष 2025 में महाकुम्भ का आयोजन प्रयागराज, उत्तर प्रदेश की पवित्र भूमि पर हो रहा है, जिसका आधार पूर्णतया वैज्ञानिक व खगोल विज्ञान एवं ज्योतिष विज्ञान के अदभुत समन्वय व आध्यात्मिकता से ओतप्रोत है। संगम में पवित्र डुबकी लगाने से व्यक्ति मनोवैज्ञानिक रूप से सकारात्मक ऊर्जा से पूर्ण होकर आध्यात्मिक उन्नति करता है। ज्योतिषीय आधार पर यह उत्सव, सूर्य चन्द्र व गुरू की विशेष स्थितियों पर निर्भर होता है। यह आयोजन न केवल विश्व का सबसे बड़ा सांस्कृतिक सम्मेलन है अपितु आध्यात्मिकता से ओतप्रोत गूढ़ रहस्यमयी विज्ञान है। पूरे विश्व से आये हुये कई करोड़ो (लगभग 66 करोड़) श्रद्धालुओं ने इस बार प्रयागराज महाकुम्भ में आस्था की डुबकी लगाई। ग्रहों की विशिष्ट स्थिति से हमारे भूखण्ड के विशेष भाग के जल और वायु में सकारात्मक ऊर्जा स्तर अच्छा हो जाता है जो आध्यात्मिक विकास के लिए एक आदर्श वातावरण को निर्मित करता है। आर्थिक रूप से भी मानव विकास में सहयोग देने में महाकुम्भ का पर्व महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। वर्ष 2025 में आयोजित होने वाले इस वर्ष के लिए प्रधानमंत्री जी ने उत्तर प्रदेश के प्रयागराज में कुल 5500 करोड़ की 167 विकास परियोजनाओं का लोकार्पण किया, लगभग 4000 हैक्टेयर में फैले प्रयागराज में आयोजित होने वाला ये महाकुम्भ का पर्व 144 वर्षों के बाद आने वाले सुखद संयोग के कारण कई करोड़ो श्रद्धालुओं की विशेष आस्था के कारण निश्चित रूप से विश्व का सबसे बड़ा धार्मिकता व वैज्ञानिकता से परिपूर्ण मानव समागम बना।

कुम्भ का पर्व भारत की विविधता में एकता का जीवन्त उदाहरण है। कुम्भ यह आयोजन सनातन संस्कृति में व्यक्ति को आत्म अनुसंधान के पथ पर अग्रसर कर मनोवैज्ञानिक रूप से उसे सकारात्मक मानसिक ऊर्जा से पुष्ट करते हुये उसके आध्यात्मिक उत्थान में सहायक होता है। कुम्भ का वैज्ञानिक व आध्यात्मिक रहस्य– कुम्भ पूर्व पर मेलो का आयोजन भारत भूमि में जिन चार जगहों पर आयोजित किया जाता है वे प्रयागराज (उ0प्र0), उज्जैन (म0प्र0), हरिद्वार (उत्तराखण्ड) व नासिक (महाराष्ट्र) है। प्राचीन ऋृषियों ने पृथ्वी पर ऐसी जगहों को चुना जहां आकाश में होने वाली घटनाओं की विशेष स्थिति में वहां की जलवायु पर प्राकृतिक रूप से प्रभाव पड़ता है। कुम्भ का आयोजन प्रत्येक 12 वर्ष में किया जाता है जिसमें खगोल, ज्योतिष, व धर्म विज्ञान का सामन्जस्य होता है। माना गया है कि इस बार महाकुम्भ 12 पूर्णकुम्भ पूर्ण हो जाने पर अर्थात् 144 वर्षों बाद आयोजित हो रहा है। इन खगोलिया घटनाओं में सूर्य, बृहस्पति एवं चन्द्रमा की स्थिति की प्रमुख भूमिका होती है। उस खगोलीय स्थिति में जब सूर्य मकर राशि में है और बृहस्पति वृष राशि में स्थित रहे तब प्रयागराज में महाकुम्भ का आयोजन होता है और पूरे ब्रहमाण्ड में विशेष ऊर्जा का प्रवाह होता है। इस समय पृथ्वी और ग्रहों की स्थिति में परिवर्तन के कारण मानव मन पर इन खगोलीय घटनाओं के दौरान विशेष प्रभाव पड़ता है क्योंकि उस समय विशेष स्थानों पर चुम्बकीय क्षेत्र सक्रिय हो जाता है जिसके कारण मानव अपनी अंतः चेतना को ध्यान, योग व साधना के माध्यम से उच्चतम स्थिति में ले जाने के योग्य हो जाता है।

सूर्य, गुरू व चन्द्र की विशेष स्थिति का प्रभाव– पौराणिक मान्यता के अनुसार समुद्र मंथन के समय अमृत कुम्भ निकलने पर दानवों द्वारा देवताओं से अमृत कलश छीनने का प्रयास किया गया, उसी समय देवराज इन्द्र का पुत्र जयंत उस अमृत कलश को लेकर चल दिया यह 12 दिनों की अवधि में देव व दानवों में संघर्ष चला यह 12 दिव्य दिन 12 वर्षो की अवधि है। दानवों ने इन 12 दिनों में 4 बार अमृत कुम्भ छीनने का प्रयास किया, उस समय सूर्य, चन्द्र व गुरू (वृहस्पति) ने अमृत कुम्भ की रक्षा की परन्तु अमृत की कुछ बूंदे छलककर पृथ्वी के चार स्थानों प्रयाग, हरिद्वार, नासिक व उज्जैन में गिरी थी। इन्हीं चारो स्थानों पर कुम्भ स्नान का आयोजन, सूर्य चन्द्र, व गुरू का विशेष राशियों में स्थित होने पर किया जाता है, जो 12 वर्ष के अन्तराल पर पूर्ण कुम्भ व 06 वर्ष की मध्यावधि में अर्धकुम्भ के रूप में आयोजित होता है। 12 पूर्ण कुम्भ के पश्चात् अर्थात् 144 वर्ष उपरान्त महाकुम्भ का आयोजन इस बार 2025 में प्रयागराज में हुआ है। कुम्भ के पर्व का योग प्रत्येक स्थान पर निर्धारित करने की वैज्ञानिक गणना निम्नवत् है–

1. प्रयागराज–जब सूर्य मकर राशि में गुरू वृषभ राशि में होते है तब प्रयागराज में, तथा चन्द्र भी मकर राशि पर स्थित होने पर अमावस्या तिथि पर त्रिवेणी संगम तट पर विशेष स्नान पर्व मौनी अमावस्या भी आयोजित होता है।

अनुरूपी लेखक / संयुक्त लेखक

2. उज्जैन– जब सूर्य मेष राशि में और गुरू सिंह राशि में हो तब उज्जैन में शिप्रा के तट पर कुम्भ आयोजित होता है।

3. हरिद्वार– जब सूर्य मेष राशि में और गुरू कुम्भ राशि मे हो तब हरिद्वार में गंगा तट पर कुम्भ पर्व होता है।

4. नासिक– जब सूर्य सिंह राशि में गुरू भी सिंह राशि में हो जाये तब नासिक में गोदावरी तट पर कुम्भ पर्व आयोजित होता है।

अतः कुम्भ केवल भारतवर्ष के लोगों के लिए ही आस्था का पर्व नहीं रहा अपितु विदेशी श्रद्धालु भी आस्था के अलौकिक व अदभुत दिव्य कुम्भ से प्रभावित हुये बिना नहीं रहे। प्रसिद्ध चीनी यात्री हेवनसांग ने अपनी भारत यात्रा में कुम्भ मेले की अद्वितीयता का उल्लेख किया है। उसने लिखा है, राजा हर्षवर्धन प्रत्येक पांच साल बाद नदियों के संगम पर एक बड़ा आयोजन करते थे, जिसमें अपना पूरा कोष गरीबों और धार्मिक लोगों को दान कर देते थे। इससे पता चलता है कि विदेशी लोग सदैव से ही सनातन संस्कृति के प्रशंसक रहे हैं। वर्तमान 2025 में प्रयागराज में आयोजित हो रहे, महाकुम्भ में लगभग 66 करोड़ से अधिक श्रद्धालुओं में केवल भारत के ही नहीं अपितु विदेशों से भी हजारों श्रद्धालु आकर संगम में आस्था की डुबकी लगा चुके है।

आध्यात्मिक रहस्य–कुम्भ का आध्यात्मिक रहस्य हमारे ग्रंथो में बताया गया है। वाल्मीकि रामायण में राम के वनवास काल के समय मे ऋषि भारद्वाज जी द्वारा उन्हें संगम के पवित्र स्थान को निवास के लिए उत्तम बताया गया। इसी प्रकार गोस्वामी तुलसीदास जी द्वारा प्रयागराज के आध्यात्मिक महत्व को रामचरितमानस में इस प्रकार बताया गया–

माघ मकरगत रवि जब होई। तीरथ पतिहि आव सब कोई।।
देव दनुज किन्नर नर श्रेणी। सादर मज्जहिं सकल त्रिवेणी।।
पूजहिं माधव पद जल जाता। परसि अछैवट हरषहिं गाता।।
भरद्वाज आश्रम अति पावन। परम रम्य मुनिवर मन भावन।।
तहां होइ मुनि रिसय समाजा। जाहिं जे मज्जन तीरथ राजा।।

अतः वाल्मीकि रामायण व रामचरित मानस दोनों में ही माघ मास में त्रिवेणी संगम में स्नान का एवं तीर्थों में तीर्थराज प्रयाग की महिमा का महत्व वर्णित किया गया है।

भारत की सनातन संस्कृति में कुम्भ पर्व पर स्नान दान व ज्ञान रूपी अमृत की प्राप्ति का महत्व बताया गया। इसके पीछे ज्योतिषीय व वैज्ञानिक आधार को वेदग्रन्थों में समझाया गया है। रामायण के अनुसार सम्पूर्ण विश्व का एकमात्र स्थान प्रयागराज ही है जहां पर तीन नदियों का समागम है गंगा, यमुना, सरस्वती, यहां पर मिलती हैं इसके पश्चात् ही अन्य नदियों का अस्तित्व समाप्त होकर केवल एकमात्र गंगा नदी का महत्व रह जाता है। इसी प्रयाग भूमि पर स्वयं ब्रहमा जी ने यज्ञ आदि कर्म सम्पन्न किया उसके पश्चात् सभी देवों व ऋषियों ने त्रिवेणी संगम पर स्नान किया था। मत्स्य पुराण में वर्णन है कि एक बार धर्मराज युधिष्ठर ने मार्कण्डेय ऋषि से पूछा कि प्रयागराज तीर्थ में संगम स्नान का क्या महत्व है? तब ऋषि ने बताया कि प्रयागराज के प्रतिष्ठानपुर से लेकर वासुकी के हृदय परिपर्यंत कंबल और अश्वतर दो भाग हैं और बहुमूलक नाग हैं। यही प्रजापति का क्षेत्र तीनों लोकों में विख्यात है। पदमपुराण के अनुसार यह यज्ञ भूमि देवताओं को अति प्रिय है एवं यहां पर किये जाने वाले दान का अनन्त फल प्राप्त होता है। अतः जिस प्रकार ग्रहों में सूर्य राजा होता है उसी प्रकार तीर्थों में प्रयागराज सर्वोत्तम तीर्थ है।

कुंभ पर्व प्रत्येक 12 वर्ष के अन्तराल पर मनाया जाता है। अब शासन के द्वारा 12 वर्ष पर पड़ने वाले कुभ को महाकुंभ कहा जाने लगा है। प्रत्येक छः वर्ष बाद अर्धकुम्भ पर्व का आयोजन भी किया जाता है। कुंभ पर्व मानव को सर्व सिद्धि प्रदान करने वाला पर्व है ऐसा अथर्ववेद में वर्णित है। कुंभ में अमृत स्नान पर्व मनाये जाते हैं। प्रयागराज में पड़ने वाले कुंभ में कुल छः अमृत स्नान पर्व भी मनाये जाते हैं प्रयागराज में पड़ने वाले कुंभ में कुल छः अमृत स्नान पर्व क्रमशः इस प्रकार से हैं– मकर सक्रान्ति, पौष पूर्णिमा, मोनी अमावसया, बसन्ती पंचमी, माघ पूर्णिमा एवं महाशिवरात्रि। कुंभ पर्व का आयोजन सूर्य चन्द्र व बृहस्पति की विशेष स्थिति के आधार पर भारत के चारो स्थान प्रयागराज, हरिद्वार उज्जैन एवं नासिक में मनाया जाता है, जो पूर्णतया खगौल विज्ञान, ज्योतिष विज्ञान, अध्यात्मिक विज्ञान व नक्षत्र विज्ञान के समन्वय पर आधारित हैं। बृहस्पति ग्रह 12 वर्ष में एक चक्र पूरा करता है अर्थात् 12 वर्ष में अपनी कक्षा में एक चक्र पूरा कर पाता है। अतः पूर्ण कुंभ का एक स्थान पर आयोजन सदैव 12 वर्ष के अन्तराल पर ही होता है। कुंभ पर्व भारतीय सनातन संस्कृति और धर्म का

ISSN: 2250-1894
Vol.-15, No.-IV, Issus-60
Year: Jan-Mar 2025

विशाल अद्वितीय पर्व है जो राष्ट्रीय एकता का महत्वपूर्ण पर्व होने के साथ ही वैश्विक पटल पर एकता व अखण्डता का अनूठा दृष्टान्त है।

सनातन धर्म में मोक्ष ही जीवन का परम लक्ष्य है सनातन संस्कृति में आन्तरिक विज्ञान को बहुत ही गहराई से समझाया गया है ऐसा किसी अन्य संस्कृति में नहीं समझाया गया। इसीलिए भारत देश विश्व की आध्यात्मिक राजधानी माना गया है। महाकुम्भ पर्व एकता पवित्रता एवं ज्ञान के साथ आत्म साक्षात्कार कराने का पूर्ण विज्ञान है। सनातन धर्म के सभी पर्व अध्यात्म विज्ञान के आधार पर मानव का विकास करके उच्च लक्ष्य की प्राप्ति कराने व मानव उत्थान में सहायक होते हैं।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. मिश्रा जे एस– महाकुम्भ पृथ्वी का सबसे बड़ा शो।
2. मत्स्य पुराण – अनुवादक रामप्रताप त्रिपाठी, आनंद प्रेस पूना।
3. रामचरित मानस गोस्वामी तुलसीदास जी द्वारा रचित।
4. पांचजन्य राष्ट्रीय समाचार पत्र 18 दिसम्बर 2024
5. सनातन संस्कृति की एक रूपता का अमीय कुंभ, संवदेना वोल्यूम 2 (IV) 2022
6. अमर उजाला राष्ट्रीय समाचार पत्र 14 जनवरी 2025।

*****